अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" से लिये गए मवाद की छटी क़िस्त

Fitre Ke Zaruri Masaail (Hindi)

फ़ित्रे के ज़रूरी मसाइल

कुल सफ़हात 36

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

फ़ित्रे के ज़रूरी मसाइल

येह रिसाला **(फ़ित्रे के ज़रूरी मसाइल)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. **98987 32611** • Email : **hindibook@dawateislamihind.net**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने ईदुल फ़ित्र

मौला अ़ली ने ख़ाली हथेली पर दम किया और..... :

एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने ह़ाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया, आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने **10 बार दुरूद शरीफ़** पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : "मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो।" (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है ! मगर) जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो उस में **एक दीनार** था ! येह **करामत** देख कर कई काफ़िर मुसल्मान हो गए। (راحتُ القلوب ص٥٠)

विर्द जिस ने किया दुरूद शरीफ़ और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ़
ह़ाजतें सब रवा हुईं उस की है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रमज़ान शरीफ़ के मुबारक महीने के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया है कि इस महीने का पहला अ़शरा **रह़मत**, दूसरा **मग़्फ़िरत** और तीसरा अ़शरा **जहन्नम**

www.dawateislami.net

से आज़ादी का है। (ابن خُزَیمه ج۳ص۱۹۲حدیث۱۸۸۷)

मा'लूम हुवा कि **रमज़ानुल मुबारक** रह़मत व मग़्फ़िरत और जहन्नम से आज़ादी का महीना है, लिहाज़ा इस रह़मतों और बरकतों भरे महीने के फ़ौरन बा'द हमें **ईदे सईद** की ख़ुशी मनाने का मौक़अ़ फ़राहम किया गया है और ईदुल फ़ित्र के रोज़ ख़ुशी का इज़्हार मुस्तह़ब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो रह़मत पर ख़ुशी करने की तरग़ीब तो क़ुरआने करीम में भी मौजूद है। चुनान्चे पारह 11 **सूरए यूनुस** की आयत नम्बर 58 में इर्शाद होता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत, और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें।

दिल ज़िन्दा रहेगा : नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : "जिस ने ईदैन की रात (या'नी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदुल अज़्ह़ा) त़लबे सवाब के लिये क़ियाम किया, उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा, जिस दिन (लोगों के) दिल मर जाएंगे।" (ابنِ ماجه ج۲ص۳٦٥حدیث۱۷۸۲)

जन्नत वाजिब हो जाती है : एक और मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं : जो पांच रातों में शब बेदारी करे उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है। ज़ुल ह़िज्जा शरीफ़ की आठवीं, नवीं और दसवीं रात (इस त़रह़ तीन रातें तो येह हुईं) और चौथी **ईदुल फ़ित्र** की रात, पांचवीं शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत)। (اَلتَّرْغِیْب وَ التَّرْهِیْب ج۲ ص۹۸ حدیث ۲)

www.dawateislami.net

मुआफ़ी का ए'लाने आ़म : हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की एक रिवायत में येह भी है : जब **ईदुल फ़ित्र** की मुबारक रात तशरीफ़ लाती है तो इसे "**लयलतुल जाइज़ा**" या'नी "इन्आ़म की रात" के नाम से पुकारा जाता है। जब **ईद** की सुब्ह़ होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मा'सूम फ़िरिश्तों को तमाम शहरों में भेजता है, चुनान्चे वोह फ़िरिश्ते ज़मीन पर तशरीफ़ ला कर सब गलियों और राहों के सिरों पर खड़े हो जाते हैं और इस त़रह़ निदा देते हैं : "**ऐ उम्मते मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ चलो ! जो बहुत ज़ियादा अ़त़ा करने वाला और बड़े से बड़ा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों से यूं मुख़ात़िब होता है : "**ऐ** मेरे बन्दो ! मांगो ! क्या मांगते हो ? मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज के रोज़ इस (नमाज़े ईद के) इज्तिमाअ़ में अपनी आख़िरत के बारे में जो कुछ सुवाल करोगे वोह पूरा करूंगा और जो कुछ दुन्या के बारे में मांगोगे उस में तुम्हारी भलाई की त़रफ़ नज़र फ़रमाऊंगा (या'नी इस मुआ़मले में वोह करूंगा जिस में तुम्हारी बेहतरी हो) मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जब तक तुम मेरा लिह़ाज़ रखोगे मैं भी तुम्हारी ख़त़ाओं की पर्दा पोशी फ़रमाता रहूंगा। मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें ह़द से बढ़ने वालों (या'नी मुजरिमों) के साथ रुस्वा न करूंगा। बस अपने घरों की त़रफ़ **मग़्फ़िरत याफ़्ता** लौट जाओ। तुम ने मुझे राज़ी कर दिया और मैं भी तुम से राज़ी हो गया।" (اَلتَّرْغِيْب وَالتَّرْهِيْب ج۲ص۶۰حديث۲۳)

कोई साइल मायूस नहीं जाता : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर तो फ़रमाइये ! **ईदुल फ़ित्र** का दिन किस क़दर अहम तरीन दिन है,

www.dawateislami.net

इस दिन **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत निहायत जोश पर होती है, दरबारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से कोई साइल मायूस नहीं लौटाया जाता। एक त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे पायां रह़मतों और बख़्शिशों पर ख़ुशियां मना रहे होते हैं तो दूसरी त़रफ़ मोमिनों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इतनी करम नवाज़ियां देख कर इन्सान का बद तरीन दुश्मन शैत़ान आग बगूला हो जाता है। चुनान्चे

शैत़ान की बद ह़वासी : ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब भी ईद आती है, शैत़ान चिल्ला चिल्ला कर रोता है। इस की बद ह़वासी देख कर तमाम शयात़ीन उस के गिर्द जम्अ़ हो कर पूछते हैं : ऐ आक़ा ! आप क्यूं ग़ज़ब नाक और उदास हैं ? वोह कहता है : हाए अफ़्सोस ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आज के दिन **उम्मते मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बख़्श दिया है, लिहाज़ा तुम इन्हें लज़्ज़ात और नफ़्सानी ख़्वाहिशात में मश्ग़ूल कर दो। **(مُكاشَفَةُ الْقُلُوب ص٣٠٨)**

क्या शैत़ान काम्याब है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! शैत़ान पर **ईद** का दिन निहायत गिरां गुज़रता है लिहाज़ा वोह शयात़ीन को हुक्म सादिर कर देता है कि तुम मुसल्मानों को लज़्ज़ाते नफ़्सानी में मश्ग़ूल कर दो ! ऐसा लगता है, फ़ी ज़माना शैत़ान अपने इस वार में काम्याब नज़र आ रहा है। **ईद** की आमद पर होना तो येह चाहिये कि इ़बादात व ह़सनात की कस्रतो बोहतात कर के रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा से ज़ियादा शुक्र अदा किया जाए, मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस अब अक्सर मुसल्मान **ईदे सईद** का ह़क़ीक़ी मक़्सद ही भुला बैठे हैं ! **वा ह़स्रता !** अब तो **ईद** मनाने का येह अन्दाज़ हो गया है

www.dawateislami.net

कि बेहूदा नक़्शो निगार बल्कि مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ जानदार की तस्वीर वाले भड़कीले कपड़े पहने जाते हैं (बहारे शरीअ़त में है कि जिस कपड़े पर जानदार की तस्वीर हो उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है, नमाज़ के इ़लावा भी ऐसा कपड़ा पहनना ना जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 627)) रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलें गर्म की जाती हैं, गुनाहों भरे मेलों, गन्दे खेलों, नाच गानों और फ़िल्मों डिरामों का एहतिमाम किया जाता है और जी खोल कर वक़्त व दौलत दोनों को ख़िलाफ़े सुन्नत व शरीअ़त अफ़्आ़ल में बरबाद किया जाता है। अफ़्सोस सद हज़ार अफ़्सोस ! अब इस मुबारक दिन को किस क़दर ग़लत़ कामों में गुज़ारा जाने लगा है। **मेरे इस्लामी भाइयो !** इन ख़िलाफ़े शर्अ़ बातों के सबब हो सकता है कि येह **ईदे सईद** ना शुक्रों के लिये "यौमे वईद" बन जाए। **लिल्लाह !** अपने ह़ाल पर रह़्म कीजिये ! फ़ेशन परस्ती और फ़ुज़ूल ख़र्ची से बाज़ आ जाइये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़ुज़ूल ख़र्चों को क़ुरआने पाक में शैत़ानों का भाई क़रार दिया है। चुनान्चे पारह 15 **सूरए बनी इसराईल** की आयत नम्बर 26 और 27 में इर्शाद होता है :

وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और फ़ुज़ूल न उड़ा बेशक उड़ाने वाले शैत़ानों के भाई हैं और शैत़ान अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है।

मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ "तफ़्सीरे सिरातुल जिनान" जिल्द 5 सफ़ह़ा 447 ता 448 पर इन आयाते मुबारक के तह़्त है : ﴿وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾﴾ **और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो।** या'नी अपना माल ना

www.dawateislami.net

जाइज़ काम में खर्च न करो। ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से "तब्ज़ीर" के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि जहां माल ख़र्च करने का ह़क़ है उस की बजाए कहीं और ख़र्च करना **तब्ज़ीर** है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स अपना पूरा माल ह़क़ या'नी उस के मसरफ़ में ख़र्च कर दे तो वोह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाला नहीं और अगर कोई एक दिरहम भी बात़िल या'नी ना जाइज़ काम में ख़र्च कर दे तो वोह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाला है। (خازن ج ۳ ص ۱۷۲)

इसराफ़ की ग्यारह ता'रीफ़ात : इसराफ़ बिला शुबा मम्नूअ़ और ना जाइज़ है और उ़लमाए किराम ने इस की मुख़्तलिफ़ ता'रीफ़ात बयान की हैं, उन में से **11 ता'रीफ़ात** दर्जे ज़ैल हैं : ﴾1﴿ ग़ैरे ह़क़ में सर्फ़ करना ﴾2﴿ **अल्लाह तआ़ला** के हुक्म की ह़द से बढ़ना ﴾3﴿ ऐसी बात में ख़र्च करना जो शरए़ मुत़ह्हर या मुरव्वत के ख़िलाफ़ हो, अव्वल (या'नी ख़िलाफ़े शरीअ़त ख़र्च करना) ह़राम है और सानी (या'नी ख़िलाफ़े मुरव्वत ख़र्च करना) मक्रूहे तन्ज़ीही। ﴾4﴿ त़ाअ़ते इलाही के ग़ैर में सर्फ़ करना ﴾5﴿ शर्ई ह़ाजत से ज़ियादा इस्ति'माल करना ﴾6﴿ ग़ैरे त़ाअ़त में या बिला ह़ाजत ख़र्च करना ﴾7﴿ देने में ह़क़ की ह़द से कमी या ज़ियादती करना ﴾8﴿ ज़लील ग़रज़ में कसीर माल ख़र्च कर देना ﴾9﴿ ह़राम में से कुछ या ह़लाल को ए'तिदाल से ज़ियादा खाना ﴾10﴿ लाइक़ व पसन्दीदा बात में लाइक़ मिक़्दार से ज़ियादा सर्फ़ कर देना ﴾11﴿ बे फ़ाएदा ख़र्च करना।

इसराफ़ की वाज़ेह़ तर ता'रीफ़ ग़ैरे ह़क़ में माल ख़र्च करना : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इन

www.dawateislami.net

ता'रीफ़ात को ज़िक्र करने और इन की तह़क़ीक़ व तफ़्सील बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं : हमारे कलाम का नाज़िर (या'नी नज़र करने वाला) ख़याल कर सकता है कि इन तमाम ता'रीफ़ात में सब से जामेअ़ व मानेअ़ व वाज़ेह़ तर ता'रीफ़ अव्वल है और क्यूं न हो कि येह उस **अ़ब्दुल्लाह** की ता'रीफ़ है जिसे **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इल्म की गठड़ी फ़रमाते और जो ख़ुलफ़ाए अर्बआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के बा'द तमाम जहान से इल्म में ज़ाइद है और अबू ह़नीफ़ा जैसे इमामुल अइम्मा का मूरिसे इल्म है رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ وَعَنْهُ وَعَنْهُمْ اَجْمَعِیْن ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 1 (ب), स. 937)

तब्ज़ीर और इसराफ़ में फ़र्क़ : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने "तब्ज़ीर" और "इसराफ़" में फ़र्क़ से मुतअ़ल्लिक़ जो कलाम ज़िक्र फ़रमाया उस का ख़ुलासा येह है कि **तब्ज़ीर** के बारे में उ़लमाए किराम के दो क़ौल हैं : **(1)**..... तब्ज़ीर और इसराफ़ दोनों के मा'ना "नाह़क़ सर्फ़ करना" हैं। येही सह़ीह़ है कि येही क़ौल ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द और ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास और आ़म सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का है। **(2)**..... तब्ज़ीर और इसराफ़ में फ़र्क़ है, तब्ज़ीर ख़ास गुनाहों में माल बरबाद करने का नाम है। इस सूरत में इसराफ़ तब्ज़ीर से आ़म होगा कि नाह़क़ सर्फ़ करना अ़बस में सर्फ़ करने को भी शामिल है और अ़बस मुत़्लक़न गुनाह नहीं तो चूंकि इसराफ़ ना जाइज़ है इस लिये येह ख़र्च करना मा'सियत होगा मगर जिस में ख़र्च किया वोह ख़ुद मा'सियत न था। और इबारत "لَاتُعْطِ فِی الْمَعَاصِیْ" (उस की ना फ़रमानी में मत दे) का ज़ाहिर येही है कि वोह काम ख़ुद ही

www.dawateislami.net

मा'सियत हो। खुलासा येह है कि तब्ज़ीर के मक़्सूद और हुक्म दोनों मा'सियत हैं और इसराफ़ को सिर्फ़ हुक्म में मा'सियत लाज़िम है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 1 (ب), स. 937 ता 939 मुलख़्ख़सन)

इन्सान व हैवान का फ़र्क़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इन्सान और हैवान में जो मा बिहिल इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़ करने वाली चीज़) है वोह अ़क़्ल व तदबीर, दूरबीनी और दूर अन्देशी है, उ़मूमन हैवान को "कल" की फ़िक्र नहीं होती और आ़म तौ़र पर उस की कोई ह़रकत किसी ह़िक्मत के मा तह़्त नहीं होती, बर ख़िलाफ़ इन्सान के और मुसल्मान को तो न सिर्फ़ "दुन्यवी कल" की बल्कि इस दुन्यवी कल के बा'द आने वाली "उख़्रवी कल" की भी फ़िक्र होती है। यक़ीनन समझदार इन्सान वोही है बल्कि ह़क़ीक़तन इन्सान ही वोह है जो "उख़्रवी कल" या'नी आख़िरत की भी फ़िक्र करे, ह़िक्मते अ़मली से काम ले और इस फ़ानी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए बाक़ी आख़िरत के लिये कोई इन्तिज़ाम कर ले। आह ! अब तो अक्सर लोग अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद माल कमाना, ख़ूब डट कर खाना और फिर ख़ूब ग़फ़्लत की नींद सो जाना ही समझते हैं।

क्या कहूं अह़बाब क्या कारे नुमायां कर गए !
मेट्रिक किया, नोकर हुए, पेन्शन मिली फिर मर गए !!

ज़िन्दगी का मक़्सद क्या है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ज़िन्दगी का मक़्सद सिर्फ़ बड़ी बड़ी डिग्रियां ह़ासिल करना, खाना पीना, और मज़े उड़ाना नहीं है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आख़िर हमें ज़िन्दगी क्यूं मर्ह़मत फ़रमाई ? आइये ! क़ुरआने पाक की ख़िदमत में अ़र्ज़ करें कि ऐ

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सच्ची किताब ! तू ही हमारी रहनुमाई फ़रमा कि हमारे जीने और मरने का मक़्सद क्या है ? क़ुरआने अ़ज़ीम से जवाब मिल रहा है :

خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ (پ۲۹، الملک:۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मौत और ज़िन्दगी पैदा की, कि तुम्हारी जांच हो (दुन्यावी ज़िन्दगी में) तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है।

(या'नी इस मौत व ज़िन्दगी को इस लिये पैदा किया गया ताकि आज़्माया जाए कि) इस दुन्या की ज़िन्दगी में कौन ज़ियादा मुत़ीअ़ (फ़रमां बरदार) व मुख़्लिस है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1040)

घर ही पर विलादत हो गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

शैत़ान के वार से बचने की कोशिश के ज़िम्न में ईद की ह़सीन साअ़तें आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले में गुज़ारिये। आप की तरग़ीब के लिये एक **मदनी बहार** अ़र्ज़ करता हूं : एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया कि शादी के कमो बेश 6 माह बा'द घर में ''उम्मीद'' के आसार ज़ाहिर हुए। डॉक्टर ने बताया कि आप का केस पेचीदा है, ख़ून की भी काफ़ी कमी है, हो सकता है ऑपरेशन करना पड़े ! मैं ने उसी वक़्त **एक माह के मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बनने की निय्यत कर ली, और चन्द रोज़ के बा'द **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र पर रवाना हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से ऐसा करम हो गया कि न अस्पताल जाने की नौबत आई और न ही किसी डॉक्टर को दिखाना पड़ा, घर ही में **मदनी मुन्ने** की विलादत हो गई।

www.dawateislami.net

घर में ''उम्मीद'' हो, इस की तम्हीद हो जल्द ही चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो
ज़च्चा की ख़ैर हो, बच्चा बिलख़ैर हो उठिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिफ़ाज़ते ह़म्ल के 2 रूह़ानी इलाज : ﴾1﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ **11** बार किसी रिकाबी (या काग़ज़) पर लिख कर धो कर औ़रत को पिला दीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल** की हिफ़ाज़त होगी। जिस औ़रत को दूध न आता हो या कम आता हो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है, चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर त़रह़ से इख़्तियार है ﴾2﴿ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ **111** बार किसी काग़ज़ पर लिख कर **ह़ामिला** के पेट पर बांध दीजिये और विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये। (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने में ह़रज नहीं) اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल** भी मह़फ़ूज़ रहेगा और बच्चा भी सिह़्ह़त मन्द पैदा होगा।

ईद या वईद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लाइक़े अ़ज़ाब कामों का इरतिकाब कर के ''यौमे ईद'' को अपने लिये ''यौमे वईद'' न बनाइये। और याद रखिये !

لَيْسَ الْعِيْدُ لِمَنْ لَّبِسَ الْجَدِيْد اِنَّمَا الْعِيْدُ لِمَنْ خَافَ الْوَعِيْد

(या'नी ईद उस की नहीं, जिस ने नए कपड़े पहन लिये,
ईद तो उस की है जो अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ से डर गया)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى भी तो ईद मनाते रहे हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज कल गोया लोग सिर्फ़ नए नए

www.dawateislami.net

कपड़े पहनने और उ़म्दा खाने तनावुल करने को ही **مَعَاذَ اللّٰه ईद** समझ बैठे हैं। ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن भी तो आख़िर **ईद** मनाते रहे हैं, मगर इन के **ईद** मनाने का अन्दाज़ ही निराला रहा है, वोह दुन्या की लज़्ज़तों से कोसों दूर भागते रहे हैं और हर ह़ाल में अपने नफ़्स की मुख़ालफ़त करते रहे हैं। चुनान्चे

ईद का अनोखा खाना : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने **दस बरस** तक कोई लज़ीज़ खाना तनावुल न फ़रमाया, नफ़्स चाहता रहा और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नफ़्स की मुख़ालफ़त फ़रमाते रहे, एक बार **ईद मुबारक** की मुक़द्दस रात को दिल ने मश्वरा दिया कि कल अगर **ईदे सईद** के रोज़ कोई लज़ीज़ खाना खा लिया जाए तो क्या ह़रज है ? इस मश्वरे पर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी दिल को आज़्माइश में मुब्तला करने की ग़रज़ से फ़रमाया, "मैं अव्वलन **दो रक्अ़त** नफ़्ल में पूरा क़ुरआने पाक ख़त्म करूंगा, ऐ मेरे दिल ! तू अगर इस बात में मेरा साथ दे तो कल लज़ीज़ खाना मिल जाएगा।" लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दो रक्अ़त अदा की और इन में पूरा क़ुरआने करीम ख़त्म किया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दिल ने इस अम्र में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का साथ दिया। (या'नी दोनों रक्अ़तें दिल जम्ई के साथ अदा कर ली गईं) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ईद** के दिन लज़ीज़ खाना मंगवाया, निवाला उठा कर मुंह में डालना ही चाहते थे कि बे क़रार हो कर फिर रख दिया और न खाया। लोगों ने इस की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : जिस वक़्त मैं निवाला मुंह के क़रीब लाया तो मेरे नफ़्स ने कहा : देखा ! मैं आख़िर अपनी दस साल पुरानी ख़्वाहिश पूरी करने में काम्याब हो

गया ना ! मैं ने उसी वक़्त कहा कि अगर येह बात है तो मैं तुझे काम्याब न होने दूंगा और हरगिज़ हरगिज़ लज़ीज़ खाना न खाऊंगा। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने लज़ीज़ खाना खाने का इरादा तर्क कर दिया। इतने में एक शख़्स लज़ीज़ खाने का त़बाक़ उठाए ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : येह खाना मैं ने रात अपने लिये तय्यार किया था, रात जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, ख़्वाब में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल हुई, मेरे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : अगर तू कल क़ियामत के रोज़ भी मुझे देखना चाहता है तो येह खाना ज़ुन्नून (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) के पास ले जा और उन से जा कर कह कि **"ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **फ़रमाते हैं कि दम भर के लिये नफ़्स के साथ सुल्ह़ कर लो और चन्द निवाले इस लज़ीज़ खाने से खा लो।"** ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى येह सुन कर झूम उठे और कहने लगे : "मैं फ़रमां बरदार हूं, मैं फ़रमां बरदार हूं।" और लज़ीज़ खाना खाने लगे। (تذکرۃ الاولیاء ج ۱ ص ۱۱۷) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रब है मो'त़ी येह हैं क़ासिम रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा पीते हम हैं पिलाते येह हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 482, 483)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

रूह़ को भी सजाइये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि **ईद** के दिन ग़ुस्ल करना, नए या धुले हुए उ़म्दा कपड़े पहनना और इत्र लगाना मुस्तह़ब है, येह मुस्तह़ब्बात हमारे ज़ाहिरी बदन की सफ़ाई और ज़ीनत से मुतअ़ल्लिक़ हैं। लेकिन हमारे इन साफ़, उजले और नए कपड़ों और नहाए हुए और ख़ुश्बू मले हुए जिस्म के साथ साथ हमारी **रूह़** भी हम पर हमारे मां बाप से भी ज़ियादा मेह़रबान ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत व इत़ाअ़त और उम्मत के ग़म ख़्वार, दो जहां के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उल्फ़त व सुन्नत से ख़ूब सजी हुई होनी चाहिये।

नजासत पर चांदी का वरक़ : ज़रा सोचिये तो सही ! रोज़ा एक भी न रखा हो, सारा माहे रमज़ान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियों में गुज़रा हो, बजाए इ़बादात के सारी सारी रातें फ़िल्म बीनियों, गाने बाजों और आवारा गर्दियों में गुज़री हों, अपने जिस्म व रूह़ को दिन रात गुनाहों में मुलव्वस रखा हो और आज **ईद** के दिन इंग्लिश फ़ेशन वाले बे ढंगे कपड़े पहन भी लिये तो इसे यूं समझिये कि गोया एक नजासत थी जिस पर चांदी का वरक़ चस्पां कर के उस की नुमाइश कर दी गई।

ईद किस के लिये है ? : सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत से सरशार दीवानो ! सच्ची बात तो येही है कि ईद उन ख़ुश बख़्त मुसल्मानों का ह़िस्सा है जिन्हों ने माहे मोह़तरम, **रमज़ानुल मुबारक** को रोज़ों, नमाज़ों और दीगर इ़बादतों में गुज़ारा। तो येह **ईद** उन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मज़दूरी मिलने का दिन है। **हमें तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **से डरते रहना चाहिये कि आह ! माहे मोह़तरम का हम ह़क़ अदा ही न कर सके।**

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ईद : ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **ईद** के दिन चन्द ह़ज़रात मकाने आ़लीशान पर ह़ाज़िर हुए तो क्या देखा कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दरवाज़ा बन्द कर के ज़ारो क़ित़ार रो रहे हैं। लोगों ने ह़ैरान हो कर अ़र्ज़ की : **या अमीरल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ! आज तो **ईद** है जो कि ख़ुशी मनाने का दिन है, ख़ुशी की जगह येह रोना कैसा ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आंसू पोंछते हुए फ़रमाया : **''هٰذَا يَوْمُ الْعِيْدِ وَهٰذَا يَوْمُ الْوَعِيْد''** या'नी येह ईद का दिन भी है और वई़द का दिन भी।'' जिस के नमाज़ व रोज़े मक़्बूल हो गए बिला शुबा उस के लिये आज ईद का दिन है, लेकिन जिस के नमाज़ व रोज़े रद कर के उस के मुंह पर मार दिये गए उस के लिये तो आज **वई़द** का दिन है (मज़ीद इन्किसारन फ़रमाया :) और मैं तो इस ख़ौफ़ से रो रहा हूं कि आह ! **''اَنَا لَا اَدْرِیْ اَ مِنَ الْمَقْبُوْلِيْنَ اَمْ مِنَ الْمَطْرُوْدِيْنَ''** या'नी मुझे येह मा'लूम नहीं कि मैं मक़्बूल हुवा हूं या रद कर दिया गया हूं।''

(नूरानी तक़रीरें, स. 184)

ईद के दिन उ़मर येह रो रो कर
बोले नेकों की ईद होती है

(वसाइले बख़्शिश, स. 707)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

हमारी ख़ुश फ़हमी : अल्लाहु अक्बर ! (عَزَّوَجَلَّ) मह़ब्बत वालो ! ज़रा सोचिये ! ख़ूब ग़ौर फ़रमाइये ! वोह फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

www.dawateislami.net

जिन को मालिके जन्नत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते ज़ाहिरी ही में जन्नत की बिशारत इ़नायत फ़रमा दी थी। उन के ख़ौफ़ो ख़शिय्यत का तो येह आ़लम हो और हम जैसे निकम्मे और बातूनी लोगों की येह ह़ालत है कि नेकी के "नून" के नुक़्ते़ तक तो पहुंच नहीं पाते मगर ख़ुश फ़हमी का ह़ाल येह है कि हम जैसा नेक और पारसा तो शायद अब कोई रहा ही नहीं ! इस रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत से उन लोगों को ख़ुसूसन दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो अपनी इ़बादात पर नाज़ करते हुए फूले नहीं समाते और बिला मस्लह़ते शरई अपने नेक आ'माल मसलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, मसाजिद की ख़िदमत, ख़ल्क़े ख़ुदा की मदद और समाजी फ़लाहो बहबूद वग़ैरा वग़ैरा कामों का हर जगह ए'लान करते फिरते, ढंडोरा पीटते नहीं थकते, बल्कि अपने नेक कामों की مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ अख़्बारात व रसाइल में तसावीर तक छपवाने से गुरेज़ नहीं करते। **आह !** इन का ज़ेह्न किस त़रह़ बनाया जाए ! इन को इख़्लासे निय्यत की सोच किस त़रह़ फ़राहम की जाए ! इन्हें किस त़रह़ बावर कराया जाए कि अपनी नेकियों का ए'लान करने में रियाकारी की आफ़त में पड़ने का शदीद ख़दशा है। और अपना फ़ोटो छपवाना ? तौबा ! तौबा ! अपने आ'माल की नुमाइश का इतना शौक़ कि फ़ोटो जैसे ह़राम ज़रीए को भी न छोड़ा गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रियाकारी की तबाहकारी, "मैं मैं" की मुसीबत और अनानिय्यत की आफ़त से हम सब मुसल्मानों की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

शहज़ादे की ईद : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने एक मर्तबा **ईद** के दिन अपने **शहज़ादे**

www.dawateislami.net

को पुरानी क़मीस पहने देखा तो रो पड़े, बेटे ने अ़र्ज़ की : **प्यारे अब्बाजान !** क्यूं रो रहे हैं ? फ़रमाया : **मेरे लाल !** मुझे अन्देशा है कि आज **ईद** के दिन जब लड़के तुम्हें इस पुरानी क़मीस में देखें तो कहीं तुम्हारा दिल न टूट जाए ! बेटे ने जवाबन अ़र्ज़ किया : दिल तो उस का टूटे जो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के काम में नाकाम रहा हो या जिस ने मां या बाप की ना फ़रमानी की हो, मुझे उम्मीद है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की रिज़ा मन्दी के तुफ़ैल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मुझ से राज़ी हो जाएगा। येह सुन कर ह़ज़रते **उ़मर फ़ारूक़** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने शहज़ादे को गले लगाया और उस के लिये दुआ़ फ़रमाई। **(مُکاشَفَۃُ الْقُلُوب ص ۳۰۸ مُلَخَّصاً) अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शहज़ादियों की ईद : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में ईद से एक दिन क़ब्ल आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की **शहज़ादियां** ह़ाज़िर हुईं और बोलीं : "**अब्बूजान !** ईद के दिन हम कौन से कपड़े पहनेंगी ?" फ़रमाया : "येही कपड़े जो तुम ने पहन रखे हैं, इन्हें धो लो, कल पहन लेना !" "नहीं ! **अब्बूजान !** हमें नए कपड़े बनवा दीजिये," बच्चियों ने ज़िद करते हुए कहा। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मेरी बच्चियो ! ईद का दिन **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने, उस का शुक्र बजा लाने का दिन है, नए कपड़े पहनना ज़रूरी तो नहीं !" "**अब्बूजान !** आप का फ़रमाना बेशक दुरुस्त है लेकिन हमारी सहेलियां हमें त़ा'ने देंगी कि तुम अमीरुल मुअमिनीन की लड़कियां हो और ईद के रोज़ भी वोही

www.dawateislami.net

पुराने कपड़े पहन रखे हैं !'' येह कहते हुए बच्चियों की आंखों में **आंसू** भर आए। बच्चियों की बातें सुन कर **अमीरुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का दिल भी पसीज गया। **ख़ाज़िन** (वज़ीरे मालियात) को बुला कर फ़रमाया : ''मुझे मेरी एक माह की तनख़्वाह पेश्गी ला दो।'' **ख़ाज़िन** ने अ़र्ज़ की : ''**हुज़ूर !** क्या आप को यक़ीन है कि आप एक माह तक ज़िन्दा रहेंगे ?'' फ़रमाया : ''جَزَاكَ اللّٰه ! बेशक ! तुम ने सहीह़ और उ़म्दा बात कही।'' **ख़ाज़िन** चला गया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बच्चियों से फ़रमाया : ''प्यारी बेटियो ! **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पर अपनी ख़्वाहिशात क़ुरबान कर दो।'' (मा'दने अख़्लाक़, ह़िस्सए अव्वल, स. 257 ता 258 बि तग़य्युरिन क़लील) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

वालिदे मर्हूम पर करम : एह़तियात़ों भरा मदनी ज़ेह्न बनाने के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये, मदनी क़ाफ़िले की बरकतों के क्या कहने ! एक इस्लामी भाई ने अपने वालिदे मर्हूम को ख़्वाब में इन्तिहाई कमज़ोरी की ह़ालत में बरह्ना किसी के सहारे पर चलता हुवा देखा। उन्हें तश्वीश हुई। उन्हों ने **ईसाले सवाब** की निय्यत से हर माह तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत कर ली और सफ़र शुरूअ़ भी कर दिया। तीसरे माह मदनी क़ाफ़िले से वापसी के बा'द जब घर पर सोए तो उन्हों ने ख़्वाब में येह दिलकश मन्ज़र देखा कि वालिदे मर्हूम सब्ज़ सब्ज़ लिबास ज़ैबे तन किये बैठे मुस्कुरा रहे हैं और उन पर बारिश की हल्की फुल्की फुवार बरस रही है।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की अहम्मिय्यत उन पर ख़ूब उजागर हुई और उन्हों ने पक्की निय्यत कर ली कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हर माह तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र जारी रखूंगा।

क़ाफ़िले में ज़रा मांगो आ कर दुआ़ पाओगे ने'मतें, क़ाफ़िले में चलो
ख़ूब होगा सवाब, और टलेगा अ़ज़ाब पाओगे बख़्शिशें, क़ाफ़िले में चलो
जो कि मफ़्क़ूद हो, वोह भी मौजूद हो اِنْ شَآءَ اللّٰه चलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 677, 672, 673)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم **की ईद : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों की एक एक अदा हमारे लिये मूजिबे सद दर्से इ़ब्रत होती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की शान बेह़द अर्फ़अ़ो आ'ला है, इस के बा वुजूद आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हमारे लिये क्या चीज़ पेश फ़रमाते हैं! सुनिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये :

خَلْق گوید کہ فردا روزِ عید است خُوشی در رُوحِ ہر مؤمن پدید است
دراں روزے کہ با ایماں بمیرم مرا در مُلک خُود آں روزِ عید است

या'नी "लोग कह रहे हैं, "कल ईद है! कल ईद है!" और सब ख़ुश हैं। लेकिन मैं तो जिस दिन इस दुन्या से अपना ईमान सलामत ले कर गया, मेरे लिये तो वोही दिन **ईद** होगा।"

سُبْحٰنَ اللّٰه (عَزَّوَجَلَّ) ! سُبْحٰنَ اللّٰه (عَزَّوَجَلَّ) ! क्या शाने तक़्वा है! इतनी बड़ी शान कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के सरदार! और इस क़दर तवाज़ोअ़ व इन्किसार!! इस में हमारे लिये भी दर्से इ़ब्रत है और हमें समझाया जा रहा है कि ख़बरदार! ईमान के मुआ़मले में

www.dawateislami.net

ग़फ़्लत न करना, हर वक़्त ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र में लगे रहना, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी ग़फ़्लत और मा'सियत के सबब ईमान की दौलत तुम्हारे हाथ से निकल जाए।

रज़ा का ख़ातिमा बिलख़ैर होगा
अगर रह़मत तेरी शामिल है या ग़ौस

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 263)

एक वली की ईद : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के भाई और ख़लीफ़ा हैं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का लक़ब **मुतवक्किल** है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه 70 बरस शह्र में रहे और कोई ज़ाहिरी ज़रीअ़ए मआ़श न होने के बा वुजूद अहलो इ़याल निहायत इत़्मीनान से ज़िन्दगी बसर करते रहे। एक बार **ईद** के दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के घर में बहुत से मेहमान जम्अ़ हो गए, घर में ख़ुर्दो नोश (या'नी खाने पीने) का कोई सामान नहीं था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बालाख़ाने पर जा कर **यादे इलाही** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो गए और दिल ही दिल में येह कह रहे थे : "आज ईद का दिन है और मेरे घर **मेहमान** आए हुए हैं।" अचानक एक शख़्स छत पर ज़ाहिर हुवा, उस ने खानों से भरा हुवा एक ख़्वान पेश किया और कहा : **ऐ नजीबुद्दीन !** तुम्हारे **तवक्कुल** की धूम मलाए आ'ला (या'नी फ़िरिश्तों) में मची हुई है और तुम्हारा ह़ाल येह है कि तुम ऐसे ख़याल (या'नी खाना त़लबी) में मश्ग़ूल हो ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ह़क़ तआ़ला عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है कि मैं अपनी ज़ात के लिये नहीं सिर्फ़ अपने मेहमानों के बाइ़स इस

त़रफ़ मुतवज्जेह हो गया था।'' ह़ज़रते सय्यिदुना नजीबुद्दीन **मुतवक्किल** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه साह़िबे करामत होने के बा वुजूद इन्तिहाई मुन्कसिरुल मिज़ाज थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इन्किसारी का येह आ़लम था कि एक रोज़ एक फ़क़ीर बहुत दूर से मुलाक़ात के लिये आया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा कि क्या नजीबुद्दीन **मुतवक्किल** (या'नी **तवक्कुल** करने वाला) आप ही हैं ? तो इन्किसारन फ़रमाया कि भाई ! मैं तो नजीबुद्दीन **मुतअक्किल** (या'नी बहुत ज़ियादा खाने वाला) हूं। **(اَخبارُ الاخیار ص٦٠ مُلَخَّصاً)**

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

करामत का एक शो'बा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस **ह़िकायत** से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब चाहता है अपने दोस्तों की ज़रूरिय्यात का ग़ैब से इन्तिज़ाम फ़रमा देता है। ब वक़्ते ज़रूरत खाना, पानी वग़ैरा ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी का अचानक ह़ाज़िर हो जाना बुज़ुर्गों से **करामत** के त़ौर पर वुक़ूअ़ में आता है। चुनान्चे ''शर्ह़े अ़क़ाइदे नस्फ़िय्यह'' में जहां करामत की चन्द अक़्साम का बयान है वहां येह भी मज़्कूर है कि ज़रूरत के वक़्त खाने पानी का ह़ाज़िर हो जाना भी करामत ही का एक शो'बा है। बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के ख़ुदादाद तसर्रुफ़ात व करामात का क्या कहना ? येह ऐसे मक़्बूलाने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ होते हैं कि उन की ज़बाने पाक से निकली हुई बात और दिल में पैदा होने वाली ख़्वाहिशात रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से पूरी फ़रमा देता है।

एक सख़ी की ईद : सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़म्र औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि **ईदुल फ़ित्र** की शब दरवाज़े पर

www.dawateislami.net

दस्तक हुई, देखा तो मेरा हमसाया खड़ा था। मैं ने पूछा : कहो भाई ! कैसे आना हुवा ? उस ने कहा : "कल **ईद** है लेकिन ख़र्च के लिये कुछ नहीं, अगर आप कुछ इनायत फ़रमा दें तो इ़ज़्ज़त के साथ हम **ईद** का दिन गुज़ार लेंगे।" मैं ने अपनी बीवी से कहा : हमारा फ़ुलां पड़ोसी आया है उस के पास **ईद** के लिये एक पैसा तक नहीं, अगर तुम्हारी राय हो तो जो **पच्चीस दिरहम** हम ने **ईद** के लिये रख छोड़े हैं उस को पेश कर दें हमें **अल्लाह तआ़ला** और दे देगा। नेक बीवी ने कहा : बहुत अच्छा। चुनान्चे मैं ने वोह सब दिरहम अपने हमसाए के ह़वाले कर दिये, वोह दुआ़एं देता हुवा चला गया। थोड़ी देर के बा'द फिर किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। मैं ने जूंही दरवाज़ा खोला, एक आदमी आगे बढ़ कर मेरे क़दमों पर गिर पड़ा और रो रो कर कहने लगा : मैं आप के वालिद का भागा हुवा ग़ुलाम हूं, मुझे अपनी ह़रकत पर बहुत नदामत लाह़िक़ हुई तो ह़ाज़िर हो गया हूं, येह **पच्चीस दीनार** मेरी कमाई के हैं आप की ख़िदमत में पेश करता हूं क़बूल फ़रमा लीजिये, आप मेरे आक़ा हैं और मैं आप का ग़ुलाम। मैं ने वोह दीनार ले लिये और ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया। फिर मैं ने अपनी बीवी से कहा : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान देखो ! उस ने हमें **दिरहम** के बदले **दीनार** अ़ता फ़रमाए (पहले दिरहम चांदी के और दीनार सोने के होते थे !) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

सलाम उस पर कि जिस ने बे कसों की दस्तगीरी की :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान

www.dawateislami.net

भी कितनी निराली है कि उस ने पच्चीस दिरहम (चांदी के सिक्के) देने वाले को आन की आन में पच्चीस दीनार (सोने के सिक्के) अ़ता फ़रमा दिये। और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का ईसार भी ख़ूब था कि वोह अपनी तमाम तर आसाइशें दूसरे मुसल्मानों की ख़ातिर क़ुरबान कर देते थे।

क़ुव्वते समाअ़त बहाल हो गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने दिल में अ़ज़मते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बढ़ाने, सीने में शम्ए़ उल्फ़ते मुस्तफ़ा जलाने और ईदे सईद की ह़क़ीक़ी ख़ुशियां पाने के लिये हो सके तो चांदरात को **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। मदनी क़ाफ़िले की बरकतें तो देखिये ! एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, कोएटा में होने वाले तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक एक बहरे इस्लामी भाई ने हाथों हाथ तीन दिन के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दौराने सफ़र ही उन की **क़ुव्वते समाअ़त** बहाल हो गई और वोह आ़म लोगों की त़रह़ सुनने लगे।

कान बहरे हैं गर, रखो रब पर नज़र होगा लुत्फ़े ख़ुदा, क़ाफ़िले में चलो
दुन्यवी आफ़तें, उख़्रवी शामतें दूर होंगी ज़रा, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सदक़ए फ़ित्र : अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह 30 **सूरतुल आ'ला** की आयत नम्बर 14 ता 15 में इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿۱۴﴾ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **''ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** में इस आयते करीमा के तह़्त लिखते हैं : इस आयत की तफ़्सीर में येह कहा गया है कि ''تَزَكّٰى'' से सदक़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ते में तक्बीरें कहना और नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1099)

सदक़ए फ़ित्र वाजिब है : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि जा कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के गली कूचों में ए'लान कर दो, **''सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है।'' (ترمذی ج۲ ص۱۵۱ حدیث۶۷۴)

सदक़ए फ़ित्र लग़्व बातों का कफ़्फ़ारा है : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मदनी सरकार, ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सदक़ए फ़ित्र** मुक़र्रर फ़रमाया ताकि फ़ुज़ूल और बेहूदा कलाम से रोज़ों की त़हारत (या'नी सफ़ाई) हो जाए। नीज़ मसाकीन की ख़ूरिश (या'नी ख़ूराक) भी हो जाए।

(ابوداؤد ج۲ ص۱۵۸ حدیث۱۶۰۹)

रोज़ा मुअ़ल्लक़ रहता है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه कहते हैं सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब तक **सदक़ए फ़ित्र** अदा नहीं किया जाता, बन्दे का **रोज़ा** ज़मीन व आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ (या'नी लटका हुवा) रहता है। (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۲ ص۳۹۵ حدیث۳۷۵۴)

www.dawateislami.net

"ईद की ख़ुशियां मुबारक" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से फ़ित्रे के 16 म-दनी फूल

(1) **सदक़ए फ़ित्र** उन तमाम मुसल्मान मर्द व औ़रत पर वाजिब है जो "साहिबे निसाब" हों और उन का निसाब "ह़ाजाते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी मसलन रहने का मकान, ख़ानादारी का सामान वग़ैरा)" से फ़ारिग़ हो। (ماخوذ از عالمگیری ج۱ص۱۹۱)

(2) **जिस** के पास साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े बावन तोला चांदी की रक़म या इतनी मालिय्यत का माले तिजारत हो (और येह सब ह़ाजाते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हों) या इतनी मालिय्यत का ह़ाजते अस्लिय्या के इ़लावा सामान हो उस को **साहिबे निसाब** कहा जाता है।[1]

(3) **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब होने के लिये, "आ़क़िल व बालिग़" होना शर्त़ नहीं। बल्कि बच्चा या मजनून (या'नी पागल) भी अगर **साहिबे निसाब** हो तो उस के माल में से उन का वली (या'नी सर परस्त) अदा करे। (ردّالمُحتار ج۳ص۳٦٥) "**सदक़ए फ़ित्र**" के लिये मिक़्दारे निसाब तो वोही है जो ज़कात का है जैसा कि मज़्कूर हुवा लेकिन फ़र्क़ येह है कि **सदक़ए फ़ित्र** के लिये माल के नामी (या'नी उस में बढ़ने की सलाहिय्यत) होने और साल गुज़रने की शर्त़ नहीं। इसी त़रह़ जो चीज़ें ज़रूरत से ज़ियादा हैं (मसलन उ़मूमी

مدینہ

1 : "साहिबे निसाब", "ग़नी", "फ़क़ीर", "ह़ाजाते अस्लिय्या" वग़ैरा इस्त़िलाह़ात की तफ़्सीली मा'लूमात फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूर किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल हिस्सए पन्जुम में मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

ज़रूरत से ज़ियादा कपड़े, बे सिले जोड़े, घरेलू ज़ीनत की अश्या वग़ैरहा) और उन की क़ीमत निसाब को पहुंचती हो तो उन अश्या की वज्ह से **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है।

(वक़ारुल फ़तावा, जि. 2, स. 386 मुलख़्ख़सन)

《4》 **मालिके** निसाब मर्द पर अपनी त़रफ़ से, अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से और अगर कोई **मजनून** (या'नी पागल) औलाद है (चाहे वोह पागल औलाद बालिग़ ही क्यूं न हो) तो उस की त़रफ़ से भी **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है, हां अगर वोह बच्चा या **मजनून** ख़ुद साह़िबे निसाब है तो फिर उस के माल में से फ़ित्रा अदा कर दे।

(عالمگیری ج۱ص۱۹۲ مُلَخَّصاً)

《5》 **मर्द** साह़िबे निसाब पर अपनी बीवी या मां बाप या छोटे भाई बहन और दीगर रिश्तेदारों का **फ़ित्रा** वाजिब नहीं। **(ایضاً ص۱۹۳ملخّصاً)**

《6》 **वालिद** न हो तो दादाजान वालिद साह़िब की जगह हैं। या'नी अपने फ़क़ीर व यतीम पोते पोतियों की त़रफ़ से उन पे **सदक़ए फ़ित्र** देना वाजिब है। **(دُرِّمُختار ج۳ص۳۶۸)**

《7》 **मां** पर अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से **सदक़ए फ़ित्र** देना वाजिब नहीं। **(رَدُّ الْمُحتار ج ۳ ص ۳۶۸)**

《8》 **बाप** पर अपनी आ़क़िल बालिग़ औलाद का **फ़ित्रा** वाजिब नहीं।

(دُرِّمُختار مع رَدِّالْمُحتار ج۳ص۳۷۰)

《9》 **किसी** सह़ीह़ शरई मजबूरी के तह़्त रोज़े न रख सका या مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर मजबूरी के **रमज़ानुल मुबारक** के रोज़े न रखे उस पर भी **साह़िबे निसाब** होने की सूरत में **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है।

(رَدّالْمُحتار ج ۳ ص ۳۶۷)

www.dawateislami.net

《10》 **बीवी** या बालिग़ औलाद जिन का नफ़क़ा वग़ैरा (या'नी रोटी कपड़े वग़ैरा का ख़र्च) जिस शख़्स के ज़िम्मे है, वोह अगर इन की इजाज़त के बिग़ैर ही इन का **फ़ित्रा** अदा कर दे तो अदा हो जाएगा। हां अगर नफ़क़ा उस के ज़िम्मे नहीं है मसलन बालिग़ बेटे ने शादी कर के घर अलग बसा लिया और अपना गुज़ारा ख़ुद ही कर लेता है तो अब अपने नान नफ़क़े (या'नी रोटी कपड़े वग़ैरा) का ख़ुद ही ज़िम्मेदार हो गया है। लिहाज़ा ऐसी औलाद की त़रफ़ से बिग़ैर इजाज़त **फ़ित्रा** दे दिया तो अदा न होगा।

《11》 **बीवी** ने बिग़ैर हुक्मे शौहर अगर शौहर का **फ़ित्रा** अदा कर दिया तो अदा न होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 398 मुलख़्ख़सन)

《12》 **ईदुल फ़ित्र** की सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ होते वक़्त जो **साहिबे निसाब** था उसी पर **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है, अगर सुब्हे सादिक़ के बा'द **साहिबे निसाब** हुवा तो अब वाजिब नहीं। (ماخوذ از عالمگیری ج۱ص۱۹۲)

《13》 **सदक़ए फ़ित्र** अदा करने का अफ़्ज़ल वक़्त तो येही है कि ईद को सुब्हे सादिक़ के बा'द **ईद** की नमाज़ अदा करने से पहले पहले अदा कर दिया जाए, अगर चांदरात या **रमज़ानुल मुबारक** के किसी भी दिन बल्कि रमज़ान शरीफ़ से पहले भी अगर किसी ने अदा कर दिया तब भी **फ़ित्रा** अदा हो गया और ऐसा करना बिल्कुल जाइज़ है। (اَیضاً)

《14》 **अगर** ईद का दिन गुज़र गया और **फ़ित्रा** अदा न किया था तब भी **फ़ित्रा** साक़ित न हुवा, बल्कि उ़म्र भर में जब भी अदा करें अदा ही है। (اَیضاً)

《15》 **सदक़ए फ़ित्र** के मसारिफ़ वोही हैं जो ज़कात के हैं। या'नी जिन

www.dawateislami.net

को ज़कात दे सकते हैं उन्हें **फ़ित्रा** भी दे सकते हैं और जिन को ज़कात नहीं दे सकते उन को **फ़ित्रा** भी नहीं दे सकते।

(اَیضاً ص۱۹٤ مُلَخَّصاً)

﴾16﴿ **सादाते** किराम को **सदक़ए फ़ित्र** नहीं दे सकते। क्यूं कि येह बनी हाशिम से हैं। **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 931 पर है : बनी हाशिम को ज़कात (फ़ित्रा) नहीं दे सकते। न ग़ैर इन्हें दे सके, न एक हाशिमी दूसरे हाशिमी को। बनी हाशिम से मुराद ह़ज़रते अ़ली व जा'फ़र व अ़क़ील और ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब की औलादें हैं।

सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार : गेहूं या इस का आटा या सत्तू आधा साअ़ (या'नी दो किलो में 80 ग्राम कम) (या इन की क़ीमत), खजूर या मुनक़्क़ा या जव या इस का आटा या सत्तू एक साअ़ (या'नी चार किलो में 160 ग्राम कम) (या इन की क़ीमत) येह एक **सदक़ए फ़ित्र** की मिक़्दार है। (عالمگیری ج۱ص۱۹۱، دُرِّمُختار ج۳ص۳۷۲) **''बहारे शरीअ़त''** में है : आ'ला दरजे की तह़क़ीक़ और एह़तियात़ येह है कि : साअ़ का वज़्न तीन सो इकावन[351] रुपै भर है और निस्फ़ साअ़ एक सो पछत्तर[175] रुपै अठन्नी भर ऊपर। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 939)

इन चार चीज़ों के इलावा अगर किसी दूसरी चीज़ से फ़ित्रा अदा करना चाहे, मसलन चावल, जुवार, बाजरा या और कोई ग़ल्ला या और कोई चीज़ देना चाहे तो क़ीमत का लिह़ाज़ करना होगा या'नी वोह चीज़ आधे साअ़ गेहूं या एक साअ़ जव की क़ीमत की हो, यहां तक कि रोटी दें तो उस में भी क़ीमत का लिह़ाज़ किया जाएगा अगर्चे गेहूं या जव की हो। (ऐज़न)

www.dawateislami.net

क़ब्र में एक हज़ार अन्वार दाख़िल हों : मन्क़ूल है कि जो शख़्स **ईद** के दिन तीन सो मर्तबा "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" पढ़े और फ़ौत शुदा मुसल्मानों की अरवाह़ को इस का ईसाले सवाब करे तो हर मुसल्मान की क़ब्र में **एक हज़ार अन्वार** दाख़िल होते हैं और जब वोह पढ़ने वाला ख़ुद मरेगा, **अल्लाह तआ़ला** उस की क़ब्र में भी **एक हज़ार अन्वार** दाख़िल फ़रमाएगा। **(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوب ص ٣٠٨)**

नमाज़े ईद से क़ब्ल की एक सुन्नत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब उन बातों का बयान किया जाता है जो ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र और बक़रईद दोनों) में सुन्नत हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ईदुल फ़ित्र** के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और **ईदुल अज़्ह़ा** के रोज़ उस वक़्त तक नहीं खाते थे जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाते। **(ترمذی ج٢ ص ٧٠ حدیث ٥٤٢)** और "बुख़ारी" की रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से है कि ईदुल फ़ित्र के दिन (नमाज़े ईद के लिये) तशरीफ़ न ले जाते जब तक चन्द **खजूरें** न तनावुल फ़रमा लेते और वोह त़ाक़ होतीं। **(بُخاری ج١ ص ٣٢٨ حدیث ٩٥٣)** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ईद को (नमाज़े ईद के लिये) एक रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाते। **(تِرمذی ج٢ ص٦٩ حدیث٥٤١)**

www.dawateislami.net

नमाज़े ईद का त़रीक़ा (ह़नफ़ी)

पहले इस त़रह़ निय्यत कीजिये : ''मैं निय्यत करता हूं दो रक्अ़त नमाज़े **ईदुल फ़ित्र** (या **ईदुल अज़्ह़ा**) की, साथ छे[6] ज़ाइद तक्बीरों के, वासित़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के, पीछे इस इमाम के'' फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और **सना** पढ़िये। फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए लटका दीजिये, फिर हाथ कानों तक उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर लटका दीजिये, फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर बांध लीजिये या'नी **पहली तक्बीर** के बा'द हाथ बांधिये इस के बा'द **दूसरी** और **तीसरी तक्बीर** में लटकाइये और **चौथी** में हाथ बांध लीजिये, इस को यूं याद रखिये कि **जहां क़ियाम में तक्बीर के बा'द कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांधने हैं और जहां नहीं पढ़ना वहां हाथ लटकाने हैं।** फिर इमाम **तअ़व्वुज़** और **तस्मिया** आहिस्ता पढ़ कर **अल ह़म्द शरीफ़** और सूरह जह्र (या'नी बुलन्द आवाज़) के साथ पढ़े, फिर रुकूअ़ करे। दूसरी रक्अ़त में पहले **अल ह़म्द शरीफ़** और सूरह जह्र के साथ पढ़े, फिर तीन बार कान तक हाथ उठा कर اَللّٰهُ اَكْبَر कहिये और हाथ न बांधिये और चौथी बार बिग़ैर हाथ उठाए اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए रुकूअ़ में जाइये और क़ाइदे के मुत़ाबिक़ नमाज़ मुकम्मल कर लीजिये। हर दो तक्बीरों के दरमियान तीन बार ''سُبْحٰنَ الله'' कहने की मिक़्दार चुप खड़ा रहना है। (माख़ूज़न बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 781, دُرِّمُختار ج٣ص٦١ वग़ैरा)

www.dawateislami.net

ईद की अधूरी जमाअ़त मिली तो....? : पहली रक्अ़त में इमाम के तक्बीरें कहने के बा'द मुक़्तदी शामिल हुवा तो उसी वक़्त (तक्बीरे तह़रीमा के इ़लावा मज़ीद) **तीन तक्बीरें** कह ले अगर्चे इमाम ने क़िराअत शुरूअ़ कर दी हो और **तीन** ही कहे अगर्चे इमाम ने तीन से ज़ियादा कही हों और अगर उस ने तक्बीरें न कहीं कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो खड़े खड़े न कहे बल्कि इमाम के साथ रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कह ले और अगर इमाम को रुकूअ़ में पाया और ग़ालिब गुमान है कि तक्बीरें कह कर इमाम को रुकूअ़ में पा लेगा तो खड़े खड़े तक्बीरें कहे फिर रुकूअ़ में जाए वरना اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कहे फिर अगर उस ने रुकूअ़ में तक्बीरें पूरी न की थीं कि इमाम ने सर उठा लिया तो बाक़ी साक़ित़ हो गईं (या'नी बक़िय्या तक्बीरें अब न कहे) और अगर इमाम के रुकूअ़ से उठने के बा'द शामिल हुवा तो अब तक्बीरें न कहे बल्कि (इमाम के सलाम फैरने के बा'द) जब अपनी (बक़िय्या) पढ़े उस वक़्त कहे। और रुकूअ़ में जहां तक्बीर कहना बताया गया उस में हाथ न उठाए और अगर दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा तो पहली रक्अ़त की तक्बीरें अब न कहे बल्कि जब अपनी फ़ौत शुदा पढ़ने खड़ा हो उस वक़्त कहे। दूसरी रक्अ़त की तक्बीरें अगर इमाम के साथ पा जाए फ़बिहा (या'नी तो बेहतर)। वरना इस में भी वोही तफ़्सील है जो पहली रक्अ़त के बारे में मज़्कूर हुई।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 782, (دُرِّمُختار ج۳ص٦٤، عالمگیری ج۱ص۱۵۱)

ईद की जमाअ़त न मिली तो क्या करे ? : इमाम ने नमाज़े ईद पढ़ ली और कोई शख़्स बाक़ी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह

www.dawateislami.net

मिल जाए पढ़ ले वरना (बिग़ैर जमाअ़त के) नहीं पढ़ सकता। हां बेहतर येह है कि येह शख़्स चार रक्अ़त चाश्त की नमाज़ पढ़े। (دُرِّمُختار ج۳ص۶۷)

ईद के ख़ुत्बे के अह़काम : नमाज़ के बा'द इमाम दो ख़ुत्बे पढ़े और **ख़ुत्बए जुमुआ़** में जो चीज़ें सुन्नत हैं इस में भी सुन्नत हैं और जो वहां मक्रूह यहां भी मक्रूह। सिर्फ़ दो बातों में फ़र्क़ है एक येह कि **जुमुआ़** के पहले ख़ुत्बे से पेश्तर ख़त़ीब का बैठना सुन्नत था और इस में न बैठना सुन्नत है। दूसरे येह कि इस में पहले ख़ुत्बे से पेश्तर 9 बार और दूसरे के पहले 7 बार और मिम्बर से उतरने के पहले 14 बार اَللّٰهُ اَكْبَر कहना सुन्नत है और जुमुआ़ में नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 783, دُرِّمُختار ج۳ص۶۷، عالمگیری ج۱ص۱۵۰)

"दे दो ईदी में ग़म मदीने का" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से ईद के 20 मदनी फूल

ईद के दिन येह उमूर मुस्तह़ब हैं :

❁ ह़जामत बनवाना (मगर ज़ुल्फ़ें बनवाइये न कि अंग्रेज़ी बाल) ❁ नाख़ुन तरश्वाना ❁ ग़ुस्ल करना ❁ मिस्वाक करना (येह उस के इलावा है जो वुज़ू में की जाती है) ❁ अच्छे कपड़े पहनना, नए हों तो नए वरना धुले हुए ❁ ख़ुश्बू लगाना ❁ अंगूठी पहनना (जब कभी अंगूठी पहनिये तो इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि सिर्फ़ साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम वज़्न चांदी की एक ही अंगूठी पहनिये, एक से ज़ियादा न पहनिये और उस एक अंगूठी में भी नगीना एक ही हो, एक से ज़ियादा नगीने न हों, बिग़ैर नगीने की भी मत पहनिये, नगीने के वज़्न की कोई क़ैद नहीं, चांदी का छल्ला या चांदी के बयान कर्दा वज़्न वग़ैरा के इलावा किसी भी धात की अंगूठी या छल्ला मर्द नहीं पहन सकता) ❁ नमाज़े **फ़ज्र**

www.dawateislami.net

मस्जिदे मह़ल्ला में पढ़ना ❁ **ईदुल फ़ित्र** की नमाज़ को जाने से पहले चन्द खजूरें खा लेना, तीन, पांच, सात या कमो बेश मगर ताक़ हों। खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा ले। अगर नमाज़ से पहले कुछ भी न खाया तो गुनाह न हुवा मगर इशा तक न खाया तो इताब (या'नी मलामत) किया जाएगा ❁ नमाज़े ईद, ईदगाह में अदा करना ❁ ईदगाह पैदल चलना ❁ सुवारी पर भी जाने में ह़रज नहीं मगर जिस को पैदल जाने पर क़ुदरत हो उस के लिये पैदल जाना अफ़्ज़ल है और वापसी पर सुवारी पर आने में ह़रज नहीं ❁ नमाज़े ईद के लिये ईदगाह जल्द चले जाना और एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना ❁ ईद की नमाज़ से पहले **सदक़ए फ़ित्र** अदा करना ❁ ख़ुशी ज़ाहिर करना ❁ कसरत से सदक़ा देना ❁ ईदगाह को इत़्मीनान व वक़ार और नीची निगाह किये जाना ❁ आपस में मुबारक बाद देना ❁ बा'दे नमाज़े ईद मुसाफ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाना) और मुआ़नक़ा (या'नी गले मिलना) जैसा कि उ़मूमन मुसल्मानों में राइज है बेहतर है कि इस में इज़्हारे मसर्रत है, मगर **अम्रद** (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से गले मिलना मह़ल्ले फ़ितना है ❁ **ईदुल फ़ित्र** की नमाज़ के लिये जाते हुए रास्ते में आहिस्ता से तक्बीर कहिये और नमाज़े ईदे अज़्ह़ा के लिये जाते हुए रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहिये। तक्बीर येह है :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ وَلِلّٰهِ الْحَمْد

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये तमाम ख़ूबियां हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779 ता 781, عالمگیری ج۱ص۱۴۹،۱۵۰ वग़ैरा)

www.dawateislami.net

बक़र ईद का एक मुस्तहब : ईदे अज़्हा (या'नी बक़र ईद) तमाम अहकाम में **ईदुल फ़ित्र** (या'नी मीठी ईद) की त़रह़ है। सिर्फ़ बा'ज़ बातों में फ़र्क़ है, मसलन इस में (या'नी बक़र ईद में) मुस्तहब येह है कि नमाज़ से पहले कुछ न खाए चाहे क़ुरबानी करे या न करे और अगर खा लिया तो कराहत भी नहीं। (عالمگیری ج۱ ص۱۵۲)

मैं ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ता था : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर साल **रमज़ानुल मुबारक** में ए'तिकाफ़ की सआदत और माहे **रमज़ानुल मुबारक** की ख़ूब बरकतें लूटिये फिर ईद में **आशिक़ाने रसूल** के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये। तरग़ीब व तह्रीस की ख़ातिर एक **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे एक इस्लामी भाई (उम्र तक़रीबन 25 बरस) एक गेरेज (Garage) पर काम करते थे। (अगर्चे फ़ी नफ़्सिही गेरेज या'नी गाड़ियों की मरम्मत का काम ग़लत़ नहीं, मगर आज कल गुनाहों भरे ह़ालात हैं। जिन को वासित़ा पड़ा होगा वोह जानते होंगे कि अक्सर गेरेज का माह़ोल किस क़दर गन्दा होता है, फ़ी ज़माना गेरेज में काम करने वालों के लिये ह़लाल रोज़ी का ह़ुसूल जूए शीर लाने के मुतरादिफ़ है।) गेरेज के गन्दे माह़ोल की नह़ूसत के सबब उन को पन्ज वक़्ता नमाज़ कुजा जुमुआ बल्कि **ईदैन** की नमाज़ों की भी तौफ़ीक़ नहीं थी, रात गए तक T.V. पर मुख़्तलिफ़ फ़िल्में डिरामे देखने में मश्ग़ूल रहते बल्कि हर क़िस्म की छोटी बड़ी बुराइयां उन के अन्दर मौजूद थीं। उन की इस्लाह़ के अस्बाब यूं हुए कि **मक्तबतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयान **"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर"** की केसिट सुनी जिस ने उन्हें सर ता पा हिला कर रख दिया। इस के बा'द **रमज़ानुल मुबारक** में **ए'तिकाफ़** की सआदत

www.dawateislami.net

हासिल हुई और आशिक़ाने रसूल के साथ तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र का शरफ़ मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गए, पांचों वक़्त नमाज़ों की पाबन्दी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एहसान कि वोह इन्सान जो **ईद** के बहाने भी मस्जिद का रुख़ नहीं करता था येह बयान देते वक़्त तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** की तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ एक मस्जिद की ज़ैली मुशावरत के निगरान की हैसिय्यत से बे नमाज़ियों को नमाज़ी बनाने की जुस्तजू में रहता है।

भाई गर चाहते हो नमाज़ें पढ़ूं, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों में तमन्ना है आगे बढ़ूं, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें **ईदे सईद** की ख़ुशियां सुन्नत के मुताबिक़ मनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। और हमें हज शरीफ़ और दियारे मदीना व ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **दीद की मदनी ईद** बार बार नसीब फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

तेरी जब कि दीद होगी जभी मेरी ईद होगी
मेरे ख़्वाब में तू आना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 424)

मुझ गुनहगार पर भी करम के छींटे पड़े : एक इस्लामी भाई (उ़म्र 22 साल) बे नमाज़ी, फ़िल्मों डिरामों के शौक़ीन और बिगड़े हुए नौ जवान थे, बुरे हमनशीनों के साथ फ़ेशन की अंधेरियों में भटक रहे थे, बुरी सोहबत की वज्ह से ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुनाहों में बसर हो रहे थे। हिलाले माहे रमज़ानुल मुबारक 1426 सि.हि.) आस्माने दुन्या पर ज़ाहिर हुवा,

www.dawateislami.net

रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की बारिशें बरसने लगीं, **उन पर भी करम के छींटे पड़े** और वोह **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में **मो'तकिफ़** हो गए। उन की ख़ज़ां रसीदा ज़िन्दगी की शाम में सुब्ह़े बहारां के मदनी फूल खिलने लगे, उन को तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हुई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह नमाज़ी बन गए, दाढ़ी और इ़मामा शरीफ़ सजाने की सआ़दत मिल गई, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के एक माह के **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र नसीब हुवा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर एक मस्जिद के ज़ैली क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों में ह़िस्सा लेने की सआ़दत ह़ासिल कर रहे हैं।

मरज़े इस्यां से छुटकारा चाहो अगर, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ आओ इधर आ भी जाओ इधर, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह
ईद मुबारक
ईद की मुबारक बाद देने का त़रीक़ा

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ईद के दिन जब मुलाक़ात फ़रमाते तो एक दूसरे को मुबारक बाद देते हुए यूं कहते : تَقَبَّلَ اللهُ مِنَّا وَ مِنْكَ (या'नी **अल्लाह** पाक हमारे और आप के आ'माल क़बूल फ़रमाए।) (فتح الباری ج ۲ ص ٤٤٦)

जब गुज़र जाएंगे माह ग्यारह
तेरी आमद का फिर शोर होगा !
क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

-अल मौत-

30 रमज़ानुल मुबारक 1439 हि.
15-6-18

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ईमान की अ़लामात

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

"ईमान के सत्तर से ज़ाइद शो'बे (अ़लामात) हैं और ह़या ईमान का एक शो'बा है।"

(مسلم، ص۴۵، حدیث: ۱۵۲)

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbacknmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net